तुलसी प्रज्ञा

TULSĪ PRAJÑĀ

वर्ष 30 ◦ अंक 116-117 ◦ अप्रैल-सितम्बर, 2002

Research Quarterly

अनुसंधान त्रैमासिकी

जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं
(मान्य विश्वविद्यालय)
JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE, LADNUN
(DEEMED UNIVERSITY)

तुलसी प्रज्ञा

TULSI PRAJÑĀ

Research Quarterly of Jain Vishva Bharati Institute

VOL.-116-117 APRIL-SEPTEMBER, 2002

Patron
Sudhamahi Regunathan
Vice-Chancellor

Editor in Hindi Section
Dr. Mumukshu Shanta Jain

English Section
Dr. Jagat Ram Bhattacharya

Editorial-Board
Dr. Mahavir Raj Gelra, Jaipur
Prof. Satyaranjan Banerjee, Calcutta
Dr. R.P. Poddar, Pune
Dr. Gopal Bhardwaj,Jodhpur
Prof. Dayanand Bhargava, Ladnun
Dr. Bachh Raj Dugar, Ladnun
Dr. Hari Shankar Pandey, Ladnun
Dr. J.P.N. Mishra, Ladnun

Publisher :
Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun-341 306

Research Quarterly of Jain Vishva Bharati Institute

VOL. 116-117 APRIL-SEPTEMBER, 2002

Editor in Hindi
Dr. Mumukshu Shanta Jain

Editor in English
Dr. Jagat Ram Bhattacharya

Editorial Office
Tulsi Prajna, Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)
LADNUN-341 306 (Rajasthan)

Publisher	:	Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun-341 306 (Rajasthan)
Type Setting	:	Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun-341 306 (Rajasthan)
Printed at	:	Jaipur Printers Pvt. Ltd., Jaipur-302 015 (Rajasthan)

Sbuscription (Individuals) Three Year 250/-, Life Membership Rs. 1500/-
Sub-Institutions/Libraries) Annual Rs. 200/-

The views expressed and facts stated in this journal are those of the writers, the Editors may not agree with them.

अनुक्रमणिका/CONTENTS

विषय	लेखक	पृष्ठ

हिन्दी खण्ड

जैन दर्शन में विश्व की अवधारणा	समणी मंगलप्रज्ञा	3
सम्यग् व्यवहार में अनेकान्तदृष्टि	डॉ. अशोककुमार जैन	15
अर्द्धमागधी आगमों में उपचार वक्रता	डॉ. हरिशंकर पाण्डेय	23
अपभ्रंश भाषा और साहित्य का संक्षिप्त इतिहास	जैन साध्वी डॉ. मधुबाला	33
जैन दर्शन में 'नय' सिद्धान्त का उद्भव	डॉ. अनेकान्त कुमार जैन	41
जैन साधना पद्धति : मनोऽनुशासनम्	डॉ. हेमलता बोलिया	47
महर्षि पाराशर का नैतिक दर्शन	डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश'	55
आचार्य हरिभद्र की समन्वयात्मक दृष्टि	डॉ. जिनेन्द्र जैन	61
साधना के दो तट : उत्सर्ग और अपवाद	साध्वी पीयूषप्रभा	67
संस्कृत जैन स्तोत्र काव्य	प्रकाश वर्मा (सोनी)	73

अंग्रेजी खण्ड

Subject	Author	Page
Ācāranga-Bhāsyam	Ācārya Mahāprajña	87
Presindential Address	Mahamahopadhyaya Haraprasad Sastri	105

Postal Department : NUR 08 R.N.I. No. 28340/75

यःस्याद्वादी वचनसमये योप्यनेकान्तदृष्टिः
श्रद्धाकाले चरणविषये यश्च चारित्रनिष्ठः ।
ज्ञानी ध्यानी प्रवचनपटुः कर्मयोगी तपस्वी,
नानारूपो भवतु शरणं वर्धमानो जिनेन्द्रः ॥

जो बोलने के समय स्याद्वादी, श्रद्धाकाल में अनेकान्तदर्शी, आचरण की भूमिका में चरित्रनिष्ठ, प्रवृत्तिकाल में ज्ञानी, निवृत्तिकाल में ध्यानी, बाह्य के प्रति कर्मयोगी और अन्तर् के प्रति तपस्वी है, वह नानारूपधर भगवान् वर्द्धमान मेरे लिए शरण हो।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित—

एम.जी. सरावगी फाउण्डेशन

(महादेव लाल गंगादेवी सरावगी फाउण्डेशन)

41/1 सी, झावुतल्ला रोड़, कोलकता- 700 019

प्रकाशक - सम्पादक - डॉ. मुमुक्षु शान्ता जैन द्वारा जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं के लिए प्रकाशित एवं जयपुर प्रिण्टर्स, जयपुर द्वारा मुद्रित